RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER

SYLLABUS FOR SCREENING TEST FOR THE POST OF

VIVECHAK,

AYURVED DEPARTMENT

1 शारीर

1. प्रकृति का निर्धारण , भेद व स्वरूप (देह व सत्त्व) ।
2. प्रमाण शारीर, अस्थि–संधि–पेशी–कण्डरा–संख्या शारीर ।
3. स्रोतस्–शारीर एवं विविध–संस्थान ।
4. कोष्ठांग–शारीर, उत्तमांग–शारीर ।
5. दोष–धातु–मल–क्रिया विज्ञान ।
6. जाठराग्नि–भूताग्नि व धात्वग्नि विवेचन ।
7. ज्ञानेन्द्रिय रचना एवं क्रिया व्यापार ।
8. अन्तःस्रावि–ग्रन्थियाँ ।

2 स्वस्थवृत्त

1. विविध–चर्या (दिन, ऋतु, रात्रि चर्या) सद्वृत्त, धारणीय – अधारणीय वेग, प्रज्ञापराध । ग्रामीण रहन–सहन के हानि–लाभ ।
2. आहारविधिविशेषायतन, आहारविधिविधान, संतर्पण–अपतर्पण जन्य रोग, भोजन के आवश्यक अवयव एवं संतुलित आहार, आहारमात्रापरिज्ञान ।
3. पोषण एवं मातृ – शिशु स्वास्थ्यसंबंधी राष्ट्रीय कार्यक्रम ।
4. उपस्तंभ परिचय (आहार, निद्रा एवं ब्रह्मचर्य) ।
5. ग्रामीण परिवेश में जल – मल निर्हरण व्यवस्था, अपद्रव्य निवारण, ग्रामीण क्षेत्र के अपद्रव्य एवं उनका निवारण ।
6. HIV/AIDS एवं दूषित जल जनित व्याधियाँ व उनका बचाव । विशेषकर अस्थि–संधिगत रोगों में आयुर्वेदीय उपक्रम एवं उपचार । जनपदोध्वंस, विविध संक्रामक रोग एवं बचाव , संसर्गज रोग ।
7. व्याधि क्षमत्व तथा विविध टीकाकरण ।
8. प्राकृतिक चिकित्सा विधियाँ एवं अष्टांग योग का परिचय ।

3 द्रव्य गुण, रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना तथा अगद तंत्र

A.
1. द्रव्य गुण विज्ञानगत सप्त पदार्थों द्रव्य, रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव एवं कर्म का विस्तृत परिचय, द्रव्य का पाँचभौतिकत्व, द्रव्य का वर्गीकरण ।
2. विविध कर्म यथा–दीपन, पाचन, शोधन, शमन अनुलोमन विरेचन, संग्राही आदि ।
3. द्रव्य–संकलन–संग्रहण–संरक्षण एवं प्रसंस्करण विधियाँ ।
4. औषधमात्रानिर्धारण–सिद्धान्त, भेषज–प्रयोग वर्णन ।
5. वानस्पतिक, खनिज एवं जान्तव द्रव्यों का गुण–कर्मात्मक परिचय

B.
1. रस, महारस, उपरस, रत्न, उपरत्न, धातु उपधातु, विषों एवं उपविषों का निरूक्ति, परिभाषा, वर्गीकरण एवं उनका शोधन मारण
2. रस–संस्कार एवं मूर्च्छना ।

C.
1. पंचविध–कषायकल्पना , संधानकल्पना एवं पथ्यकल्पना का निर्माण, मात्रा एवं प्रयोग परिज्ञान ।
2. स्नेह पाक विधि, लेप–रसक्रिया–गुटिका–अवलेह–सार–सत्व–अंजन–आश्च्योतन–विड़ालक क्षीरपाक–पुटपाक आदि का परिज्ञान ।
3. प्राच्य प्रतीच्य मतानुसार मान परिज्ञान ।

D.
1. विष परिभाषा–योनि–भेद व वर्गीकरण । विविध स्थावर विष, जंगमविष, गरविष एवं दूषी विष ।
2. विषाक्त भोजन परीक्षण, विरूद्ध आहार एवं शंका विष का ज्ञान ।
3. विष की सामान्य चिकित्सा एवं विविध उपक्रम ।
4. चिकित्सक की साक्षी संबंधी परिज्ञान ।
5. आयु विनिर्णय, मृत्यु का व्यवहारायुर्वेदीय पक्ष ।
6. अभिघात–भेद, दग्ध–प्रकार एवं इनका व्यवहारायुर्वेदीय परिज्ञान ।
7. चिकित्सक के कर्तव्य, नियम, व्यावसायिक अधिकार एवं गोपनीयता ।

4. रोग एवं विकृति विज्ञान

1. व्याधि–वर्गीकरण, निदानपंचक , षट्क्रियाकाल का नैदानिक महत्त्व ।
2. दोष धातु मलों का विकृति विज्ञानीय अध्ययन ।

3. विविध रोगी – परीक्षा (त्रिविध षड्विध, अष्टविध) ।
4. धातु, उपधातु, मल एवं इन्द्रिय–प्रदोषज विकारों का पूर्ण परिज्ञान ।
5. कोष्ठ व शाखागत विकार ।
6. रोगोत्पत्ति में स्रोतस् का महत्त्व ।
7. विकृति विज्ञानीय परीक्षण (प्रयोगशालीय रक्त, मूत्र, मल, ष्ठीवन एवं वीर्य के विविध परीक्षण) ।

5. प्रसूति–स्त्रीरोग एवं कौमारभृत्य

A
1. स्त्री शारीर का विशिष्ट–परिज्ञान, स्त्री–शुक्र,रज, ऋतुकाल, ऋतुमती एवं रजोनिवृत्ति का परिज्ञान ।
2. गर्भावक्रान्ति, मासानुमासिक गर्भवृद्धि एवं गर्भपोषण, अपरा–निर्माण गर्भ–आसन,अवतरण एवं उदय ।
3. गर्भ व गर्भिणी व्यापद् एवं इनका निवारण ।
4. प्रसव–व्यापद् एवं चिकित्सा व्यवस्था, नवजात शिशु परिचर्या एवं सूतिका परिचर्या ।

B.
1. कौमारभृत्य की परिभाषा एवं महत्त्व, गर्भ, बाल,कुमार, युवा आदि की परीक्षा ।
2. सद्योजात–जातमात्र–नवजात–बालक परिचर्या, स्तन्याभाव में पथ्य, स्तन्य परीक्षा एवं दोष–निवारण के उपाय
3. दन्तोद्गम जन्य व्याधियाँ व चिकित्सा ।

6. काय चिकित्सा पंचकर्म एवं रसायन–वाजीकरण

1. काय शब्द की निरुक्ति, चिकित्सा की परिभाषा, पर्याय एवं भेद ।
2. आत्ययिक–चिकित्सा प्रबंधन, मानस रोगों की चिकित्सा का सामान्य सिद्धान्त ।
3. पंचकर्म परिज्ञान ।
4. विभिन्न रोगों का निदान एवं औषध योग सहित चिकित्सात्मक परिज्ञान ।

7 शल्य एवं शालाक्य

1. शल्य की परिभाषा,व्रण,व्रणशोथ, विद्रधि की परीक्षा, स्थान आकृति एवं अधिष्ठानानुसार भेद, उपद्रव, दोष तथा साध्यासाध्यता ।
2. अस्थि भग्न के प्रकार, लक्षण एवं उनकी चिकित्सा तथा आत्ययिक उपक्रम ।
3. अर्श शब्द की निरुक्ति, भेद एवं गुद रोगों की चिकित्सा ।
4. अर्बुद के प्रकार एवं कर्कटार्बुद का आयुर्वेद एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार विशिष्ट चिकित्सा उपक्रम ।
5. शस्त्र कर्म में पूर्व कर्म, प्रधान कर्म एवं पश्चात् कर्म की विधियाँ एवं उनका महत्व ।
6. क्षार–कर्म, अग्नि कर्म एवं रक्तमोक्षण परिचय ।
7. विभिन्न शल्य रोगों का निदान – चिकित्सात्मक – अध्ययन ।
8. नेत्र परीक्षण एवं नेत्र रोग निदान चिकित्सा ।
9. आश्च्योतन, पुटपाक, तर्पण, बिड़ालक, अंजन, पिण्डी व स्वेदन विधि का परिज्ञान ।
10. शिरो रोगों की संख्या, निदान एवं चिकित्सा ।
11. कर्ण एवं नासागत रोगों की संख्या, निदान, लक्षण व चिकित्सा ।
12. मुखरोग, ओष्ठ, दन्त एवं जिव्हागत रोगों के कारण लक्षण व चिकित्सा ।

* * * * *

Pattern of Question Papers :

1 Objective Type Paper.
2 Maximum Marks : 100
3 Number of Questions : 120
4 Duration of Paper : Two Hours.
5 All Questions carry equal marks.
6 There will be **Negative Marking** for wrong answer.

* * * * *

07-06-2012